Advanced International Journal for Research (AIJFR)
E-ISSN: 3048-7641 ● Website: www.aijfr.com ● Email: editor@aijfr.com

जनपद बागेश्वर की सूर्य प्रतिमाः प्रतिमाशास्त्रीय अध्ययन

शालिनी पाठक

अतिथि व्याख्याता, इतिहास विभाग, एस एस जे परिसर, विश्वविद्यालय, अल्मोड़ा।

वैदिक काल में सूर्य की गणना प्रमुख देवता के रूप में होती थी। ऋग्वेद[1] में 'सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च' का उल्लेख है, अर्थात सूर्य समस्त जगत की आत्मा है। ऋग्वेद[2] में एक अन्य स्थान पर सूर्य को उषा द्वारा लाया गया चमकीला अश्व कहा गया है, तथा एक, सात या अगणित अश्वों युक्त रथ का उनका वाहन बताया गया है।[3] उत्तर वैदिक कालीन ग्रंथों में भी सूर्य का उल्लेख प्राप्त होता है। अथर्ववेद[4] में सूर्य को शारीरिक व्याधियों का हरण करने वाला कहा गया है।

सूर्य प्रतिमा की प्रतिष्ठा के सन्दर्भ में वृहत्तसंहिता[5] में उल्लेखित है कि इनकी प्रतिष्ठा मग करें। भविष्यपुराण[6] में उल्लेखित कथा के अनुसार जाम्बवती से उत्पन्न कृष्ण पुत्र साम्ब द्वारा मूलस्थान (आधुनिक मुल्तान) में चन्द्रभागा (चेनाब) के तट पर निर्मित सूर्य मंदिर का पुरोहित पद स्थानीय ब्राह्मणों द्वारा स्वीकार न किए जाने पर शकद्वीप के मगों को पुरोहित पद प्रदान किया गया। गया जिले में गोविन्दपुर के शक सम्वत् 1058 के अभिलेख में मगों का साम्ब द्वारा लाया जाना उल्लेखित है।[7] नदी के तट पर निर्मित सूर्य मंदिर का उल्लेख ह्वेनसांग द्वारा भी किया गया है।[8] कुषाण नरेश कनिष्क की मुद्राओं पर 'मिइरो' नाम अंकित है, जिसका तादात्म्य ईरानी मिहर से किया जाता है, जो एक सूर्य पूजक सम्प्रदाय था। इन साक्ष्यों के आधार पर भण्डारकर का मत है कि कनिष्क काल में यह सम्प्रदाय भारत में प्रचलित हुआ।[9]

प्रतिमा लक्षण

सूर्य प्रतिमा का प्राचीनतम् उल्लेख वृहत्तसंहिता [10] में वर्णित है। इसमें सूर्य प्रतिमा को आभूषणों से सुसज्जित, उदीच्यवेषधारी, पैरों से वक्ष तक चोलक धारण किए हुए तथा दोनों हाथों में कमल लिये हुए दर्शाया गया है। यह ग्रंथ सूर्य के रथ, उसमें जुते अश्व और उसके उपरिचारकों का उल्लेख नहीं करता है। विष्णुधर्मोत्तर पुराण[11] के अनुसार सभी आभूषणों से अलंकृत, स्मश्रु–युक्त, कवचधारी तथा चतुर्भुज सूर्य उदीच्यवेषधारी हों। सूर्य सारथी अरूण द्वारा संचालित सात अश्व से जुते रथ, जिसके चक्र में सात आरियां हों, पर आसीन हों। वे अपने दाएँ–बाएँ दो हाथों में पुष्पमाला के रूप में बनी रश्मियाँ धारण किए हुए हों। सूर्य के दाएँ पार्श्व में पत्र एवं लेखनी युक्त पिंगल तथा बाएँ पार्श्व में खेटक (चर्म) व शूलधारी दण्डी अंकित हों। विष्णुधर्मोत्तर पुराण[12] के अनुसार सभी ग्रहों से घिरे सूर्य के बाईं ओर सिंहाकित ध्वज हो तथा उनके पार्श्व में उनके चार पुत्र रेवन्त, यम, दो मनु तथा उनकी पत्नियाँ राज्ञी, निक्षुभा, छाया और सूवर्चसा भी अंकित हों। अग्नि पुराण[13] के अनुसार द्विभुजी सूर्य एक चक्र और सात अश्व युक्त रथ पर आरूढ़ हों तथा वे अपने दोनों हाथों में कमल पुष्प धारण किए हुए हों। उनके दाहिनी ओर मसिपात्र और लेखनी लिए हुए 'कुण्डी' तथा बाईं ओर दण्ड धारण किए हुए पिंगल हों तथा राज्ञी व निक्षुभा भी उनके पार्श्व में चित्रित हों। अग्नि पुराण में उल्लेखित 'कुण्डी' तथा बायीं ओर दण्ड धारण किए पिंगल हो तथा राज्ञी व निक्षुभा भी उनके पार्श्व में चित्रित हों। अग्नि पुराण में उल्लेखित 'कुण्डी' पिंगल का ही दूसरा नाम है। इस प्रकार सूर्य प्रतिमा उक्त निर्देशों में दोनो पार्श्वों में पिंगल के अंकन का उल्लेख है, जबकि बाईं ओर दण्ड धारण किए हुए दण्डी के अंकन का निर्देश होना चाहिए था।[14] मत्स्य पुराण[15] के अनुसार सूर्यदेव को सुन्दर नेत्रों से सुशोभित, हाथों में कमल धारण किए हुए, सात अश्व व एक चक्र के रथ में विराजमान बनाना चाहिए। विचित्र मुकुट तथा नाना प्रकार के

आभूषणों से अलंकृत सूर्य का शरीर चोलक से आच्छादित हों तथा तेज से आवृत उनके दोनों चरण दो वस्त्रों से ढके हों। उनके पार्श्वों में दण्डी एवं पिंगल नामक प्रतिहार खड्ग धारण किए हुए हों तथा लेखनी लिए हुए धाता (ब्रह्मा) भी पार्श्व में अंकित हों। सूर्य पत्नियों के अंकन का उल्लेख यहाँ नहीं मिलता है।

इन ग्रंथों के अतिरिक्त भविष्य पुराण,[16] पद्म पुराण,[17] गरूड़ पुराण[18] तथा दक्षिण भारतीय आगम ग्रंथों में सूर्य प्रतिमा निर्माण हेतु दिशा निर्देश प्राप्त होते हैं।

स्थानक सूर्य प्रतिमा

सूर्य की यह प्रतिमा बैजनाथ मूर्ति गोदाम में संग्रहित है। प्रतिमा में सूर्य समभंग मुद्रा में खड़े हैं। सूर्य शीर्ष में किरीट मुकुट, वृत्त कुण्डल, एकावली, उत्तरीय, चोलक, स्मश्रु, वियंग तथा अलंकृत उपानह से सुशोभित हैं। वियंग का एक छोर नीचे की ओर लटकता हुआ अंकित है तथा वियंग से बँधी कटार तथा पार्श्व में खड्ग स्पष्ट दृष्टिगोचर है। नाभि के स्तर तक उठे उनके दोनों हाथ पद्म पुष्प का गुच्छा धारण किए हुए हैं, जिसकी नाल उनकी हथेलियों के मध्य स्पष्ट दृष्टिगोचर है। सूर्य के दाएँ पार्श्व में पिंगल चित्रित है, जिनका दायाँ हाथ खण्डित है तथा वाम हस्त मसिपात्र धारण किये हुए है। पिंगल व दण्डी के गले में मफलर के समान वस्त्र बँधा हुआ है। वाम पार्श्व में दाएँ हाथ में दण्ड धारण किए हुए दण्डी अकित हैं, उनका बायाँ हाथ खण्डित है। दोनों ही सूर्य के समान वेषभूषा युक्त तथा स्तश्रु युक्त हैं। प्रतिमा के शीर्ष में पद्म प्रभामण्डल अंकित है। सूर्य की आंशिक रूप से खण्डित यह प्रतिमा सादगी व अलंकरण के दृष्टिकोण से लगभग 8 वीं शती ई0 में निर्मित प्रतीत होती है।

सूर्य की एक अन्य प्रतिमा बागनाथ मंदिर के सम्मुख लघुदेवकुलिका में स्थापित हैं। प्रतिमा में द्विभुजी सूर्य पंच पाद–पीठ पर समभंग स्थानक मुद्रा में प्रदर्शित हैं। सूर्य शीर्ष में अलंकृत किरीट मुकुट, जिसके निचले हिस्से में मोतियों की लड़ी प्रदर्शित है, कुण्डल, ग्रैवेयक, वर्म, वनमाला, यज्ञोपवीत, वियंग, घुटनों से नीचे तक अलंकृत धोती तथा उपानह से अंलकृत हैं। वक्षस्थल तक उठे उनके दोनों हाथों में प्रफुल्ल पद्म शोभित है। सूर्य के दाईं ओर त्रिभंग मुद्रा में श्मश्रु युक्त पिंगल लेखनी व मसिपात्र धारण किए हुए हैं। पिंगल के पार्श्व में रानी निक्षुभा त्रिभंग मुद्रा में खड़ी हैं, उनका दायाँ हाथ अपने निचले वस्त्र को थामे हुए तथा बायाँ हाथ कटिहस्त है। सूर्य के वाम पार्श्व में दण्डी त्रिभंग मुद्रा में खड़े हैं, उनका दायाँ हाथ खड्ग धारण किए हुए तथा बायाँ कटिहस्त है। दण्डी के पार्श्व में रानी राज्ञी त्रिभंग मुद्रा में अंकित हैं। सूर्य के पैरों के मध्य भूदेवी स्थानक मुद्रा में अंकित हैं। इन आकृतियों के अतिरिक्त दाईं ओर निक्षुभा व पिंगल के सम्मुख दो–दो आकृतियाँ बैठी हुई अंकित हैं। ये चारों आकृतियाँ खण्डित अवस्था में है। ये चार आकृतियाँ सूर्य के चार पुत्र यम, रेवन्त और दो मनु हो सकते हैं। प्रतिमा के मध्य परिकर में दोनों पार्श्वो में गज सिंह का अंकन है। प्रतिमा के शीर्ष में दाईं ओर ब्रह्मा तथा बाईं ओर शिव बैठे चित्रित हैं। त्रिमुख ब्रह्मा जटामुकुट धारी तथा लम्बकूर्च हैं। उनका ऊपरी दायाँ हाथ स्रुव धारण किए हुए, निचला दायाँ अक्षमाला सहित अभय मुद्रा में, ऊपरी बायाँ हाथ पुस्तक तथा निचला कमण्डलु धारण किए हुए है। जटामुकुटधारी शिव का पहला हाथ अक्षमाला धारण किए हुए अभय मुद्रा में तथा शेष हाथों में वह त्रिशूल, सर्प व कमण्डलु धारण किए हुए हैं। प्रतिमा के शीर्ष पश्च भाग में पद्म प्रभामण्डल अंकित है। 72 से.मी. ऊँची तथा 36 से. मी. चौड़ी सूर्य की यह प्रतिमा अलंकरण व अनुचर आकृतियों की अत्यधिकता के फलस्वरूप लगभग 12 वीं शताब्दी में निर्मित प्रतीत होती है।

आसन सूर्य प्रतिमा

सूर्य की यह आसन प्रतिमा बागनाथ मंदिर, बागेश्वर के मण्डप में अवस्थित है। प्रतिमा में द्विभुजी सूर्य पद्मपीठ पर पद्मासन मुद्रा में बैठे प्रदर्शित हैं। पद्मपीठ के नीचे सप्ताश्व अंकित हैं। केन्द्रीय अश्व के ऊपर सारथी पंगु अरूण हैं, जिनका अर्धांग मात्र प्रदर्शित है। अरूण दाएँ हाथ में सप्ताश्वों की रश्मियाँ धारण किए हुए हैं। सूर्य किरीट मुकुट, मकर कुण्डल, हसुली, वनमाला, अलंकृत जनेऊ, वक्ष में वर्म, कमर में वियंग तथा चरणों में उपानह धारण किए हुए

हैं। कंधे तक उठे दोनों हाथों में सूर्य पूर्ण विकसित पद्म धारण किए हुए हैं। सूर्य के दाएँ पार्श्व में पिंगल त्रिभंग मुद्रा में अंकित हैं। पिंगल के कमर में बँधा मसिपात्र स्पष्ट दृष्टिगोचर है। पिंगल के पीछे सूर्य की पत्नी निक्षुभा त्रिभंग मुद्रा में खड़ी है। उनका दायाँ हाथ कटिहस्त तथा वाम हस्त में पद्म धारण किए हुए है। सूर्य के वाम पार्श्व में दाएँ हाथ में खड्ग धारण किए हुए दण्डी त्रिभंग मुद्रा में खडे हैं, उनका वाम हस्त कटिहस्त मुद्रा में है। दण्डी के पीछे सूर्य की पत्नी राज्ञी दाएँ हाथ में पद्म धारण किए हुए त्रिभंग मुद्रा में खड़ी है, उनका बायाँ हाथ कटिहस्त मुद्रा में है। दण्डी व पिंगल सूर्य के समान वेशभूषा धारण किए हुए हैं। प्रतिमा के मध्य परिकर में दानों ओर दो–दो मानव आकृतियाँ त्रिभंग मुद्रा में अंकित है। इनका दायाँ हाथ अक्षमाला धारण किए हुए अभय मुद्रा में तथा बायाँ हाथ कमण्डलु धारण किए हुए है। प्रतिमा के शीर्ष परिकर में दाईं ओर तीन मानव आकृतियाँ अंकित है। प्रथम दो आकृतियाँ द्वितीय परिकर में अंकित आकृतियों के समान मुद्रा में हैं, एक तथा तीसरी आकृति विद्याधर गंधर्व है। बाईं ओर अंकित आकृतियाँ खण्डित हैं, एक आकृति का केवल मस्तक व दो हाथ अंकित है। इस आकृति के पश्च में एक खण्डित आकृति का केवल पश्च सर्प पुच्छाकृत भाग अंकित है तथा शीर्ष भाग पूर्णतः खण्डित है। द्वितीय व तृतीय परिकर में अंकित यह आकृतियाँ आठ ग्रहों की हैं, जिसमें केन्द्र में स्वयं सूर्य पद्मासन मुद्रा में अंकित हैं। विष्णुधर्मोत्तर पुराण[20] में भी सूर्य के चारों ओर सभी ग्रहों के अंकन का निर्देश प्राप्त होता है। प्रतिमा के शीर्ष में पद्म प्रभामण्डल प्रदर्शित है। सूर्य की यह प्रतिमा 56 से. मी. ऊँची तथा 50 सें. मी. चौड़ी है तथा अलंकरण के दृष्टिकोण से लगभग 11–12 वीं शताब्दी में निर्मित प्रतीत होती है।

सूर्य की एक अन्य आसन प्रतिमा वर्तमान में बैजनाथ मूर्ति गोदाम में संग्रहित है।[21] प्रतिमा में सूर्य सप्ताश्व रथ पर बनी पीठ के ऊपर उत्कुटिकासन मुद्रा में प्रदर्शित हैं। उनका सारथी अरूण सप्ताश्वों की रश्मियाँ थामें हुए प्रदर्शित है। सूर्य शीर्ष में अंलकृत मुकुट (जिसका आधार कोणीय व शीर्ष भाग गोलाकार है), वृत्त कुण्डल, मोतियों का हार, एकावली, वक्षस्थल पर ब्लाउजनुमा वस्त्र (जो सीने पर अर्धवृत्ताकार है), घुटनों तक अलंकृत बूट से सुशोभित हैं तथा श्मश्रु युक्त हैं। कटि में वियंग से बधाँ उनका अधोवस्त्र उनके पैरों के मध्य लटकता हुआ अंकित है। प्रतिमा में सूर्य का वाम हस्त व जंघा भाग खण्डित है । घुटने पर अवस्थित दाएँ हाथ में त्रिनाल पद्म धारण किए हुए हैं, जिसकी नाल उनकी हथेलियों से नीचे तक अंकित है। सूर्य के दाएँ व बाएँ पार्श्व में धनुर्धारिणी उषा और प्रत्युषा आलीढ़–प्रत्यालीढ़ मुद्राओं में चित्रित हैं। प्रतिमा के शीर्ष भाग के दोनों ओर मालाधारी विद्याधर तथा पद्म प्रभामण्डल अंकित है। शैली के आधार पर यह प्रतिमा लगभग 10–11 वीं शताब्दी में निर्मित प्रतीत होती है।

सूर्य की यह प्रतिमा दक्षिण भारतीय शास्त्रों, अंशुमद्भदागम और सुप्रभेदागम में वर्णित सूर्य प्रतिमा विवरण से साम्यता रखती हैं। इन ग्रन्थों में द्विभुजी सूर्य को पद्मपुष्प धारण किए हुए सप्ताश्व पर आरूढ़ जिस पर अरूण को भी प्रदर्शित किया जाए तथा उनके पार्श्वों में उषा (दाहिनी तरफ) व प्रत्युषा (बाईं तरफ) के अंकन का निर्देश प्राप्त होता है।[22] उत्तर भारतीय परम्परा जिसमें सूर्य को उदीच्य वेष धारण किए हुए अंकित किया जाता है, के विपरीत इस प्रतिमा में सूर्य के शरीर को अधिक खुला प्रदर्शित किया गया है। प्रतिमा में अनुचरों के रूप में केवल उषा व प्रत्यूषा का अंकन रोचक है। अग्रवाल[23] के अनुसार सूर्य प्रतिमा में उषा व प्रत्यूषा भारतीय एवं राज्ञी, निक्षुभा तथा दण्डी–पिंगल ईरानी परम्परा के आ गए हैं। इस आधार पर प्रतिमा दक्षिण भारतीय शास्त्रों के अनुसार निर्मित प्रतीत होती है, जिसमें सूर्य प्रतिमा में विदेशी तत्वों की उपेक्षा की गई है।

जनपद बागेश्वर से प्रकाश में आई सूर्य प्रतिमाएँ विशिष्ट हैं। इन प्रतिमाओं में सूर्य स्थानक और आसन दोनों ही रूपों में दृष्टव्य हैं। बागनाथ मंदिर समूह में विद्यमान सूर्य मंदिर के गर्भगृह में स्थापित सूर्य प्रतिमा में सूर्य को उदीच्यवेषधारी अपने सेवक दण्डी व पिंगल के साथ प्रदर्शित किया गया है तथा सर्वाभरण सूर्य की अद्वितीय आभा उत्कीर्ण करने में शिल्पी पूर्णतः सफल रहा है। बागनाथ मंदिर के मण्डप में स्थापित आसनस्थ प्रतिमा में सूर्य के साथ उषा प्रत्यूषा एवं आठ ग्रह निरूपित हैं तथा सूर्य स्वयं केन्द्र में हैं। यह प्रतिमा दक्षिण भारतीय शिल्प ग्रंथों पर आधारित है।

E-ISSN: 3048-7641 ● Website: www.aijfr.com ● Email: editor@aijfr.com

संदर्भ

1. ऋग्वेद : 1/115/1
2. ऋग्वेद : 7/77/3
3. ऋग्वेद : 7/63/2, 5/45/9, 1/115/3
4. अथर्ववेद : 1/22/1
5. वृहत्तसंहिता : 60/19
6. ठभ|छक|त्झ |त्ए त्ण ळण रू 1965ए ;त्म्त्प्छज्म्क्द्ध ट|ष्छिटैडए॑ |टैड |छक व्ज्भ्म्त् डप्छव्ट त्म्स्प्ळप्व्॑ैल्ज्म्डए च|ळभ् 153.54
7. अवस्थी, रामाश्रय : 1967, खजुराहो की देव प्रतिमाएँ, पृष्ठ 164
8. ठ|छम्त्श्रभ्|ए श्रण् छण् रू 1956ए ज्भ् क्म्टव्स्व्च्डम्छज् व्थ् भ्प्छक्न् प्ब्व्छव्ळत|च्भ्ल्ए च|ळभ् 430–31
9. ठभ|छक|त्झ |त्ए त्णळण रू 1965ए त्म्त्प्छज्म्क्द्ध ट|ष्छिटैडए॑ |टैड |छक व्ज्भ्म्त् डप्छव्ट त्म्स्प्ळप्व्॑ैल्ज्म्डए च|ळभ्ए 154
10. वृहत्तसंहिता : 58/46–48
11. विष्णुधर्मोत्तर पुराण : 67/2–11
12. विष्णुधर्मोत्तर पुराण : 67/8–11
13. अग्नि पुराण : 51/1–3
14. अवस्थी, रामाश्रय : 1967, खजुराहो की देव प्रतिमाएँ, पृष्ठ 167
15. मत्स्य पुराण : 261/1–8
16. भविष्य पुराण : 124/13–39
17. पद्म पुराण : 5/57/95–96
18. गरूड़ पुराण : 1/39/6
19. अवस्थी, रामाश्रय : 1967, खजुराहो की देव प्रतिमाएँ, पृष्ठ 167
20. विष्णुधर्मोत्तर पुराण : 67/4–11
21. मठपाल, यशोधर : 1994, कुमाऊँ की सूर्य एवं कार्तिकेय प्रतिमाएँ, पृष्ठ 34, चित्र सं. 9
22. त|व्ए ज्ण |ण्ळण्रू 1914ए ;त्मचतपदजमक 1999द्धए म्स्म्डम्छैे व्थ् भ्प्छक्न् प्ब्व्छव्ळत|च्भ्ल्ए टवसण प्ए च्तंज प्प्ए च्ंहम 305.07
23. अग्रवाल, वासुदेवशरण : 1966, भारतीय कला, पृष्ठ 344